भारतीय ने उनमें काम करना शुरू किया, और उसमें उन्हें जिस विरोध का सामना करना पड़ा, उसका उल्लेख इसी अध्याय में ऊपर किया जा चुका है। नजीबाबाद के श्री धर्मेन्द्रनाथ आर्य, बाबू बनारसीलाल आर्य, और श्री शिवचरणदास आदि जो कार्यकर्ता गढ़वाल में प्रचार कर रहे थे, उनका कार्य भी मुख्यतया शिल्पकारों में ही था। श्री जयानन्द तथा अन्य प्रचारकों के प्रयत्न से हजारों शिल्पकार आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए और अनेक स्थानों पर समाजों की स्थापना हुई। गढ़वाल में जो आर्यसमाज सबसे पहले स्थापित हुए, उनमें चोंदकोट का समाज अन्यतम है। उसकी स्थापना पण्डित रघुवरदयाल (श्रीदयाल मुनि) द्वारा की गयी थी। वह जन्म से ब्राह्मण थे, पर सत्यार्थ-प्रकाश पढ़कर महर्षि के अनुयायी हो गये थे। वह भी पहले सेना में थे और सैनिक सेवा से निवृत्त होकर वैदिक धर्म के प्रचार में प्रवृत्त हो गये थे। सन् १९२५ में उन्होंने श्री केशरसिंह रावत के सहयोग से चोंदकोट में आर्यसमाज स्थापित किया, और उसे केन्द्र बनाकर प्रचार का कार्य प्रारम्भ कर दिया। एकेश्वर के मेले में जब वह प्रचार कर रहे थे, तो आर्यसमाज के विरोधियों ने उनपर तथा उनके साथियों पर हमला कर दिया, पर उन्होंने प्रचार-कार्य बन्द नहीं किया। उनके प्रयत्न से हजारों शिल्पकारों को यज्ञोपवीत धारण कराया गया। ब्रह्मचारी बालकराम पण्डित जी के ही शिष्य थे। सन् १९३४-३५ तक गढ़वाल में दस आर्यसमाज स्थापित हो चुके थे। समाजों की इस संख्या में निरन्तर वृद्धि होती गयी, और एक समय ऐसा भी आया जबकि यह संख्या ११७ तक पहुँच गयी। पर दुर्भाग्य से ये सब समाज देर तक सक्रिय नहीं रह सके। दुर्गम पहाड़ी बस्तियों में स्थित होने के कारण इनमें आर्य-प्रचारकों का आना-जाना कम हो गया। साथ ही, आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं का ध्यान भी स्वाधीनता संग्राम की ओर आकृष्ट हो गया। फिर भी अनेक आर्यसमाज गढ़वाल में सक्रिय रहे और इन द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य किया जाता रहा। सन् १९४७ तक जो आर्यसमाज गढ़वाल में सक्रिय थे, उनमें रावली आदिपंचपुरी का समाज एक था। इसकी स्थापना २५ मई, १९४१ को श्री जयानन्द भारतीय की प्रेरणा और श्री शान्तिप्रकाश प्रेम प्रभाकर और श्री सन्तसिंह आर्य आदि के पुरुषार्थ से हुई थी। जयानन्द जी के कार्यकलाप का यह समाज प्रधान केन्द्र था। दलितोद्धार तथा समाज-सुधार के लिए इस समाज द्वारा बहुत कार्य किया गया। श्री शान्तिप्रकाश प्रेम चिरकाल तक इसके कर्मठ कार्यकर्ता रहे। फरवरी, १९४६ में कंचोली में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी, और १९४७ में तलाई तथा बमनखोला में।

सन् १९१२ से १९४७ तक के काल में जो बहुत-से आर्यसमाज उत्तरप्रदेश में स्थापित हुए, उन सबका विवरण दे सकना न सम्भव है और न उसकी आवश्यकता ही है। पर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार का परिज्ञान प्राप्त करने के लिए कुछ समाजों का उल्लेख उपयोगी होगा। देहरादून जिले में डोईवाला में समाज की स्थापना सन् १९१३ में हुई थी। देहरादून समाज के प्रधान बाबू ज्योतिस्वरूप ने उसके लिए भूमि दान दी थी, और श्री किशनसिंह रईस उसके प्रथम प्रधान थे। इस जिले के ऋषिकेश नगर में और देहरादून के कर्णपुर मुहल्ले में सन् १९३४ में समाज स्थापित हुए थे, और कालसी तथा चकराता में भी इसी समय के लगभग। सन् १९४७ तक देहरादून जिले में कुल १२ आर्यसमाज विद्यमान थे।

Scanned by CamScanner